विज्ञान और हम

अलबर्ट आइन्स्टीन ने सेन फ्रांसिसको जाने से पूर्व एक साक्षात्कार में जब कहा था कि आम आदमी के लिए आज का जीवन इतना तीव्रगामी हो गया है कि उसे अखबार के मुख्य समाचारों पर नज़र डालने का भी समय नहीं मिलता तब उनका आशय जीवन की गति को धीमा करने से था।

'कुछ वर्ष पूर्व लोगों के पास सुकून से बैठकर विचार करने का समय होता था। यद्यपि कुछ लोग इस अवसर का लाभ नहीं उठाते थे। किन्तु आज स्थिति यह है कि चाहते हुए भी रुककर विचार करने का समय किसी के पास नहीं है। इस भागते जीवन में हम विज्ञान को साधारण रूप से समझने में भी असमर्थ हैं। विज्ञान को समझने में आम लोगों में कोई उत्सुकता नहीं दिखती। भले ही यह विरोधाभासी लगे लेकिन है सच कि विज्ञान लोगों की वास्तविकता से पहचान कराने में कम ही मददगार साबित होता है। वैज्ञानिक तकनीक का विकास इस तीव्र गति से हो रहा है कि उसे साधारण व्यक्ति समझने में असमर्थ है। ज़रूरत है कुछ थमने की ताकि साधारण व्यक्ति भी इससे नाता बना सके।

विज्ञान की प्रगति के पीछे उद्देश्य नेक है व भविष्य उज्ज्वल है। अधिकांश वैज्ञानिक खोजें व्यावहारिक उपयोग की होती हैं। इनका प्रयोग मानव जीवन में सुधार लाने या उसे नष्ट करने, दोनों उद्देश्य से किया जा सकता है। विज्ञान स्वयं इन दोनों में से किसी भी ओर जाने हेतु प्रेरित नहीं करता। विज्ञान द्वारा दी गई सौगातों का दुरुपयोग औद्योगिक घरानों व सरकारों का पेशा है। ये संस्थान ही जीवन की व्यावहारिक समस्याओं को दूर करने के लिए वैज्ञानिक निष्कर्षों का प्रयोग करते हैं। इसके परिणामस्वरूप आर्थिक प्रतिस्पर्धा, व्यापारिक ईर्ष्या, अधिक मुनाफा कमाने की होड़ व उद्योगों का पूंजीकरण शुरू होता है। धन के पीछे भागने की प्रवृत्ति लोगों में उन्माद पैदा करती है जिससे जीवन की शोभा व सौंदर्य दोनों नष्ट हो जाते हैं। बुराइयां तथा दुष्टता पैदा करने वाली इस प्रवृत्ति की धर्म भी निंदा करता है। लोगों में धन के प्रति लोभ इस समय चरम सीमा पर है। इसका महत्व कम होने पर ही धर्म व विज्ञान द्वारा विश्व की सम्पत्ति को मानवीय सुख के नए मूल्यों को प्रस्थापित कर बढ़ाया जाएगा। इस समय मानव सुख का मतलब भौतिक साज-समान की उपलब्धता ही माना जाता है। इसे नए मूल्यों द्वारा बदलना होगा। जब हम अभी के सामाजिक उथल-पुथल से ग्रस्त शहरी लोगों के जीवन में, भय व श्रद्धा उत्पन्न कर देंगे, वाणिज्य व औद्योगिक संगठनों को मानवीयता के प्रति संवेदनशील बना देंगे तथा ग्रामीण लोगों में शिक्षा व ज्ञान का प्रसार कर नागरिक प्रशासन में उनकी भागीदारी सुनिश्चित कर देंगे, तभी हम राष्ट्र के समन्वित विकास की आशा कर सकते हैं। तभी हम लोगों को शांति व सुकून दे सकते हैं जिससे वे अपनी प्रतिभा का समुचित उपयोग कर अपने घरों व आसपास के वातावरण को समृद्ध कर सकें।

इस समय मानव सुख का मतलब भौतिक साज़ोसमान की उपलब्धता ही माना जाता है। इसे नए मूल्यों द्वारा बदलना होगा। जब हम अभी के सामाजिक उथल-पुथल से ग्रस्त शहरी लोगों के जीवन में, भय व श्रद्धा उत्पन्न कर देंगे, वाणिज्य व औद्योगिक संगठनों को मानवीयता के प्रति संवेदनशील बना देंगे तथा ग्रामीण लोगों में शिक्षा व ज्ञान का प्रसार कर नागरिक प्रशासन में उनकी भागीदारी सुनिश्चित कर देंगे, तभी हम राष्ट्र के समन्वित विकास की आशा कर सकते हैं।

विज्ञान की सीमाओं को उनसे बेहतर कौन जान सकता है जिन्होंने विज्ञान को जिया है। उनके अनुसार विज्ञान का उद्देश्य शरीर की रक्षा ही नहीं अपितु आत्मा की रक्षा करना भी है। विज्ञान प्रकृति के आवरण को हटाकर हमें अनेक तथ्यों तथा